रक्षक ही भक्षक!

डॉ. ज्योति*

भारत की राजधानी दिल्ली के एक इलाके में इस साल जनवरी में एक चौंका देने वाली घटना हुई थी। इस भयानक खबर को देखते ही किसी का भी दिल धड़कना बंद कर देगा। यह एक दर्दनाक खबर थी। एक बीस साल की युवती को कथित रूप से सामूहिक बलात्कार का निशाना बनाया गया और उसके बाद उसके सिर के बाल हटाकर, मुंह पर कालिख लगाकर मोहल्ले में घुमाया गया। इंसान से हैवान बने ये लोग इसी बात पर नहीं रुके बल्कि उसके गले में चप्पल की माला डाली गई। उस वक्त तालियाँ बजाई जा रही थीं। वीडियो बनाया गया और उसे हर संभव जगह फैलाया गया। ऐसा करने वालों में पुरुष, बच्चे और महिलाएं स्वयं शामिल थीं। यह घटना दिल्ली के कस्तूरबा नगर इलाके की हैं। वर्तमान समय में पुलिस इस केस की काफी छानबीन कर चुकी है। पुलिस का कहना है कि महिला की काउन्सलिंग की जा रही है। हम जानते हैं कि अगर हमारे शरीर में कहीं किसी जगह कोई घाव हो जाए तो उसके ठीक होने के बाद भी निशान हमेशा के लिए रह जाते हैं।

इस घटना में वह पूरा मोहल्ला शामिल था जहाँ युवती को काफी लोग पहचानते थे। वे उसके रक्षक बन सकते थे। पर हैरत है कि किसी ने भी आगे बढ़कर इस घटना को रोकने का काम नहीं किया। व्यक्ति जिस जगह से होता है वह लगभग पूरी तरह से उस जगह का भले न भी हो, पर वह अपना एक हिस्सा वहाँ जरूर रखता है। इतना बड़ा आस-पड़ोस था। और सब के सब तमाशा देखने का 'लुत्फ' उठा रहे थे। किसी ने भी उस लड़की के लिए मदद का हाथ नहीं बढ़ाया। साल 2012 में निर्भया बलात्कार पर उबल पड़ी दिल्ली इस घटना पर मुंह सी के पड़ी थी। इस पर कोई राजनीति भी नहीं गरमाई जबकि यह मामला सीधे तौर पर अपराध के साथ विश्वासघात का था। इसमें शासन-प्रशासन, समाज और आसपास के लोग भी शामिल थे। यह सोचना कि अब वह लड़की अपने संग हुई इस घटना से उबर कर सामान्य जीवन बिताएगी, हास्यास्पद होगा। वह इस घाव के संग उम्र भर रहेगी।

अखबारों में निरंतर छपती खबरों से पता चलता है कि बलात्कार जैसी जघन्य घटनाओं में नब्बे प्रतिशत से ज्यादा वे लोग अपराधी होते हैं, जिन्हें पीड़िता पहले से जानती है। ये उनके खुद के संबंधी होते हैं। यानी घर में रहने वाला या आने-जाने वाला कोई भी व्यक्ति लड़कियों के लिए खतरनाक होता है। विश्वास के टुकड़े होने में कोई समय नहीं लगता। घरों के भीतर रहने वाली सड़ांध में से एक यह है। जब इन घटनाओं को अंजाम दिया जाता है तब लड़की को ही यह कहा जाता है कि इस हादसे की वजह वह खुद ही होगी। यह कोई नयी बात भी नहीं है। प्राचीन पुरानी कहानियों में भी ऐसी पीड़िताएं हैं जिनका यकीन तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई।

इटली में सोलहवीं शती में एक महान् कलाकार हुए जो अपनी सोने और धातु से संबंधित कृतियों के लिए आज भी जाने जाते हैं। इनका नाम बेनवेनुतो चेलिनी है। इनकी कई शानदार कृतियों में से एक कृति बहुत प्रसिद्ध है। इस कृति में पर्सियस की मूर्ति है और उसके एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कटा हुआ सिर है। यह सिर मेडुसा का है। प्राचीन ग्रीक कथा के अनुसार साँपों के बाल वाली मेडुसा का सिर नायक पर्सियस ने काटा था। इस कृति में पर्सियस के शरीर को जिस खूबी से ढाला गया है, ऐसा लगता है कि वह पूरी मानवता का नायक है। लेकिन क्या कहानी वास्तव में यही है? क्या कटे सिर और सांप के बाल वाली मेडुसा मानवता की दुश्मन थी या खुद एक पीड़िता थी?

---

* स्वतंत्र लेखिका।

ग्रीक प्राचीन कथाओं में ऐसा कहा जाता है कि मेडुसा एक सुंदर और दोषरहित स्त्री थी। एक बार जब वह देवी एथेना के मंदिर में पूजा का रही थी तभी समुद्र का देवता पोसायडन वहाँ आया और उसकी खूबसूरती पर मुग्ध हो गया। उसने मेडुसा का बलात्कार किया। वह रोई। जब यह बात देवी एथेना को पता चली तो उसने मेडुसा को गुस्से में यह श्राप दिया कि उसके बाल खतरनाक सांप में तब्दील हो जाएंगे। उसकी आँखें ऐसी हो जाएंगी कि वह जिसे देखेगी वह पत्थर में तब्दील हो जाएगा। बाद में पर्सियस के द्वारा उसका कत्ल होता है। और इसी पर चेलिनी की कृति भी आधारित है। एथेना ने पीड़ित को ही कसूरवार माना और सजा दी। इस तरह हम इतिहास में जटिलतम कथाओं में भी यह पाते हैं कि स्त्री के विश्वास को तोड़ने में वे लोग भी शामिल थे जिन्हें वह पूजा करती थी। भारत में भी पौराणिक कथाओं में ऐसे ढेरों उदाहरण मिल जाएंगे जिसके चलते स्त्री को छल का शिकार होना पड़ा।

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'दी आर्ग्युमेंटेटिव इंडियन' में ध्यान खींचने वाली बातें बताते हैं। सार कुछ यूँ है कि इतिहास में सबसे तीखे और पैने संवाद जो हुए हैं, उन्हें स्त्रियों ने किया है। जब युधिष्ठिर अपनी जुए की लत में संपूर्ण राजपाट, भाई, दास और स्वयं को हार जाते हैं, तब वह द्रौपदी को भी दांव पर लगा देते हैं। जब द्रौपदी को सभा में जबरन लाया जाता है तो वह पूछती है, ''जब धर्मराज स्वयं को ही हार चुके हैं और वे अमुक्त हैं तो उनको मुझे दांव पर लगाने का क्या अधिकार है?'' वह यहीं नहीं रुकती, वह सभा में दासों से जुड़े कानून और हकों से जुड़ी बातों के बारे में भी सवाल करती है और अंत में अपने पतियों को आजाद भी करवाती है। लेकिन इस पूरी कथा में युधिष्ठिर की भूमिका असंदिग्ध है। उसने द्रौपदी का विश्वास तोड़ दिया था। अन्य मिथक कथाओं में भी कुछ ऐसी खाली जगहें हैं जहाँ स्त्रियों के विश्वास को तोड़कर उन्हें मुश्किलों में डाला गया।

लेकिन यहाँ यह सवाल किया जा सकता है कि स्त्री ने अपने साथ बने रहने वाले रक्षकों को भक्षकों में तब्दील हो जाने के बाद भी जागरूकता क्यों नहीं अपनाई? आज भी वह भक्षकों से मुक्त क्यों नहीं हो पा रही है? हम अपने अध्ययन के अनुसार यह देखते हैं कि स्त्री-पुरुष के संबंधों को वे दोनों स्वयं तय नहीं करते। जिन मामलों में हमें लगता भी है कि वे स्वतंत्र रूप से अपने लिए फैसले ले रहे हैं, वास्तव में वे भी उनके द्वारा नहीं होते। इस बात से चौंका जा सकता है। स्त्री-पुरुष के संबधों में जो संरचनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उनमें राज्य, समाज, घर-परिवार, उसका पितृसत्तात्मक ढांचा, धार्मिक, आर्थिक प्रणालियां और स्त्री का स्वयं का शरीर है। ये सभी बंधन में हैं। उदाहरण के लिए आज के समय में महंगाई पर चर्चा हो रही है पर औरतों के लिए नौकरियों अथवा कोरोना महामारी में नौकरियों से हाथ धो बैठी कामगार महिलाओं की चर्चा कहीं नहीं है?

सिमोन द बोउआ अपनी विख्यात स्त्रीवादी पुस्तक में यह कहती हैं कि औरत जन्म नहीं लेती बल्कि औरत बनाई जाती है। इस वाक्य में वे सारे देखे और समझे अर्थ मौजूद हैं जिन्हें करीब से समझा जाना चाहिए। औरत को औरत बनाने की प्रक्रिया समाज में बेहद बारीकी से तैयार की जाती है। किसे यकीन होगा कि रूसो जैसे लेखक जिसने 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (**Social Contract**) जैसी पुस्तक लिखी है, वे स्त्रियों से संबंधित आश्चर्यजनक विचार रखते थे। वह औरतों को यह सलाह देते थे कि उन्हें तो तैयार होकर वे सभी मोहक क्रियाएं करनी चाहिएं जिससे पुरुषों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो। पर स्त्री बुद्धिवादियों ने इसके उलट अपनी स्थितियों पर विचार किया है। केट मिलेट अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सेक्सुअल पॉलिटिक्स' (**Sexual Politics**) में यह बताती हैं कि राज्य और इसकी तमाम संस्थाओं पर पुरुषों का अधिकार है। हम वर्तमान में भी देखते हैं कि घर में लड़कियां भाई और पिता के नियंत्रण में रहती हैं। शादी के बाद पति के नियंत्रण में और बुजुर्ग हो जाने पर बेटे के नियंत्रण में। अधिकांश मामलों में ऐसा होता है। इस पूरी संरचना में स्त्रियां, मानो अपने रक्षकों के बीच रहती हैं।

जर्मेन ग्रीयर अपनी एक अन्य पुस्तक 'द व्होल वुमन' (**The Whole Woman**) में एक दिलचस्प बात कहती हैं कि स्त्री इस पितृसत्ता से बाहर निकलने के लिए क्या करती है जब उसे इसके बारे में पता चलता है? उनके मुताबिक स्त्रियों के पास इससे पूरी तरह से निकलने की न के बराबर ही सुविधाएं हैं। पर ऐसा नहीं है कि अपने नियंत्रकों से वह बचने के उपाय नहीं कर

सकती। समाज अपने भीतर बुनियादी बदलाव ला सकता है। वह स्त्री को एक शरीर से बढ़कर एक स्वतंत्र, विकसित, बौद्धिक मानव समझे। यह बात सिर्फ कानून की किताबों तक ही न सीमित हो। स्त्रियों को वह सभी अधिकार दें जो उनके जीवन को पोषित करें। उदाहरण के लिए उनके चुनाव करने के अधिकार का अभ्यास सुनिश्चित किया जाए। वह अपनी पसंद के अनुसार अपना काम, साथी अथवा जीवन बिताने के लिए आजाद हों। समाज के रूप में समाज को उन सभी स्त्री संबंधी विचारों और व्यवहारों को रद्द करना होगा जो उसके व्यक्तित्व अथवा गरिमा को ठेस पहुंचाते हैं। उदहारण के लिए 'इज्जत' व 'पवित्रता' की विचारधारा को खत्म करना होगा। ऐसे स्कूल विकसित करने की आवश्यकता है जहाँ स्वस्थ-अस्वस्थ, स्त्री-पुरुष संबंधी विचारों पर संवाद हो। स्त्री 'वीनस' से आई मालूम न पड़े।

स्त्री के भक्षक एक दिन में नहीं बनते। उनके बनने की एक प्रक्रिया है। समाज में इस पर बहस हो। राज्य को इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। राज्य स्त्रियों को पढ़ने लिखने संबंधी केन्द्र अधिक से अधिक खोले, उन्हें समुचित प्रशिक्षण मिले, उनकी सुरक्षा को बेहतरीन किया जाए, उन्हें रोजगार मिले, उनके शरीर को वह सम्मान मिले जो एक मानव को मिलने चाहिए। इस सब प्रक्रिया में पुरुषों को अलग से नहीं छोड़ा जा सकता। पुरुषों को स्वयं खुद पर काम करने की जरूरत है। उन्हें यह समझना ही होगा कि स्त्री एक मानव पहले है। स्त्रियों ने लंबे समय से कई प्रकार के धोखे खाए हैं। लगातार श्रम किया व सामाजिक और धार्मिक पवित्रता की जिम्मेदारी वह सदियों से उठाती चली आ रही है। इसके अंतर्गत पुरुषों को सबकुछ नियंत्रण करने वाली संस्थाएं यह जिम्मेदारी सौंपती आई हैं कि वह स्त्री पर नियंत्रण और निगरानी रखे। निवेदिता मेनन ने अपनी पुस्तक 'सीईंग लाइक अ फेमिनिस्ट' (**Seeing Like a Feminist**) में सही कहा है कि पितृसत्ता के प्रवाह और उसकी शैली को समझने की जरूरत है। यह एक ऐसी संरचना है जिसमें स्त्री और पुरुष को एंगेज किया जाता है। इस प्रवाह में उनकी पहले से तय भूमिकाओं को निभाने के लिए प्रवेश कराया जाता है।

शरीर विज्ञान की कक्षाओं में पुरुष शरीर की रचना अथवा एनाटॉमी के चित्र ही कक्षाओं में दिखाए या दिवारों पर टांगे जाते हैं। यह देखकर बेहद कम उम्र के दिमाग यही समझते हैं कि सारा विज्ञान पुरुषों की शरीर रचना पर ही केंद्रित होता है। उनके लिए स्त्री का शरीर रहस्य ही बना रहता है। शरीर की रचना अर्थात स्त्री एनाटॉमी के चित्र 'शर्म' के चलते छुपा लिए जाते हैं। स्कूलों में इस बारीक सी शैली को बदलकर ही स्त्री शरीर रचना के इर्द गिर्द मौजूद टैबू को ध्वस्त किया जा सकता है। अपने सामूहिक और छोटे प्रयासों से हम बहुत से लोगों को अपराधी और पीड़ित बनने से रोक सकते हैं। समाज की बुनियादी इकाई के रूप में हमें अभी बहुत काम करना है। इसके बिना हम एक स्वस्थ समाज के बारे में सोच भी नहीं सकते।

❐❐❐❐